अध्याय 24

हमारे गौरव

भारत का इतिहास अत्यधिक गौरवशाली रहा है। इस गौरव को प्राप्त करने के लिए यहाँ के वैज्ञानिकों, साहित्यकारों, कलाकारों आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इनमें से कतिपय प्रेरक महापुरुषों के कार्य की यहाँ जानकारी दी जा रही है।

चन्दबरदाई

चन्दबरदाई

चन्द बरदाई का जन्म सन् 1148 को लाहोर में हुआ। इनके पिता का नाम राव वैण था। राव वैण अजमेर के चौहानों के पुरोहित थे। इसी से चन्द को अपने पिता के साथ राजकुल के सम्पर्क में आने का अवसर मिला। बाल्यकाल से ही ये प्रतिभाशाली सिद्ध हुए और शीघ्र ही इन्होंने भाषा, साहित्य, व्याकरण, छन्द, पुराण, ज्योतिष आदि का ज्ञान प्राप्त कर लिया। दिल्ली के सम्राट पृथ्वीराज चौहान के न केवल राज्य–कवि घोषित हुए बल्कि उनके सलाहकार व मित्र भी बन गए। चन्दबरदाई केवल कवि ही नहीं थे, अस्त्र–शस्त्र की विधिवत् शिक्षा भी इन्होने प्राप्त की थी और युद्ध के समय वे सदैव सेना के साथ रहकर अपने रण–कौशल का भी परिचय देते थे। 'पृथ्वीराज रासो' चन्दबरदाई की प्रसिद्ध रचना है। 'पृथ्वीराज रासो' हिन्दी का प्रथम महाकाव्य कहलाता है। इस ग्रन्थ से चन्दबरदाई की विद्वता, वीरता, सहृदयता और मित्र भक्ति का परिचय प्रचुर मात्रा में मिलता है।

गतिविधि– पढें व बताएं :

1. चन्दबरदाई के पिता का नाम क्या था?
2. चन्दबरदाई का जन्म कहाँ हुआ?
3. चन्दबरदाई में कवि के अतिरिक्त कौन–कौन से गुण थे?
4. चन्दबरदाई की प्रसिद्ध रचना कौन–सी है?

महान् गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त

महान् गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त

ब्रह्मगुप्त का जन्म 598 ई. में हुआ था। इनका जन्म स्थान भीनमाल (जालोर) राजस्थान में माना जाता है। ब्रह्मगुप्त गुप्तकाल के प्रमुख खगोल शास्त्री थे। उन्होने तीस वर्ष की आयु में 628 ई. में 'ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त' नामक ग्रन्थ की रचना की। यह ग्रन्थ भारतीय खगोल शास्त्र का प्रामाणिक ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के अलावा इन्होनें 'खण्डखाद्यकम्' नामक ग्रन्थ की रचना भी की है। इसमें विशेषकर अन्तर्वेशन (interopolation) तथा समतल त्रिकोणमिति एवं गोलीय त्रिकोणमिति दोनों में sine (ज्या) और cosine (कोटिज्या) के नियम उपलब्ध है। ब्रह्मगुप्त के इन ग्रन्थों के अरबी और फारसी भाषा में अनुवाद के

माध्यम से भारत का यह गणित एवं खगोल विज्ञान का ज्ञान अरब तथा बाद में पश्चिम के देशों को प्राप्त हुआ। ब्रह्मगुप्त ने अपने ग्रन्थों में वर्गमूल व घनमूल लिखने की सरल विधियाँ दी है। शून्य के गुणधर्म की व्याख्या भी इन ग्रन्थो में की गई है। ब्रह्मगुप्त का ज्यामिति के क्षेत्र में विशेष योगदान रहा है।

गतिविधि–

आओ जानकारी प्राप्त करें–

1. ब्रह्मगुप्त ने तीस वर्ष की आयु में 'ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त' नामक ग्रन्थ की रचना की।
2. यह ग्रन्थ भारतीय खगोल शास्त्र का प्रामाणिक ग्रन्थ है।
3. इसके अलावा ब्रह्मगुप्त ने 'खण्डखाद्यकम्' नामक ग्रन्थ की भी रचना की।
4. ब्रह्मगुप्त के इन ग्रन्थों का अनुवाद अरबी व फारसी भाषा में हुआ।

भारत का यह गणित एवं खगोल विज्ञान का ज्ञान अरब एवं बाद में पश्चिम देशों को प्राप्त हुआ।

विश्व के प्रथम शल्य चिकित्सक–महर्षि सुश्रुत

सामान्यतः यह भ्रम है कि शल्य क्रिया का प्रारम्भ यूरोप में हुआ। पर हमारे देश में यह प्राचीन काल से ही अत्यन्त विकसित अवस्था में थी। शल्य क्रिया के क्षेत्र में सबसे प्रमुख नाम महर्षि सुश्रुत का है। ये एक कुशल एवं प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक थे। सुश्रुत ही वे प्रथम चिकित्सक थे जिन्होने शल्य क्रिया को एक व्यवस्थित रूप प्रदान किया। उन्होने इसे परिष्कृत ही नहीं किया बल्कि इसके द्वारा अनेक मनुष्यों को शल्य क्रिया द्वारा स्वास्थ्य लाभ पहुँचाया। सुश्रुत महान् ऋषि विश्वामित्र के वंशज थे। सुश्रुत द्वारा रचित प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सुश्रुत संहिता' है। शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में 'सुश्रुत संहिता' को आज भी प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है। प्लास्टिक सर्जरी को आजकल चिकित्सा विज्ञान की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि माना जाता है। यद्यपि अमेरिका के विद्वान् इसका श्रेय लेते हैं, किन्तु सुश्रुत ने

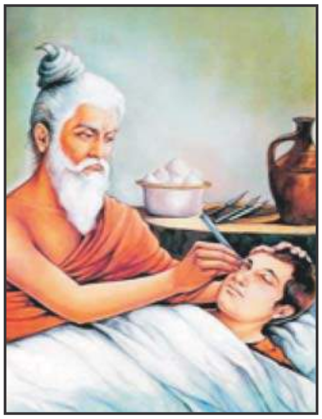

महर्षि सुश्रुत

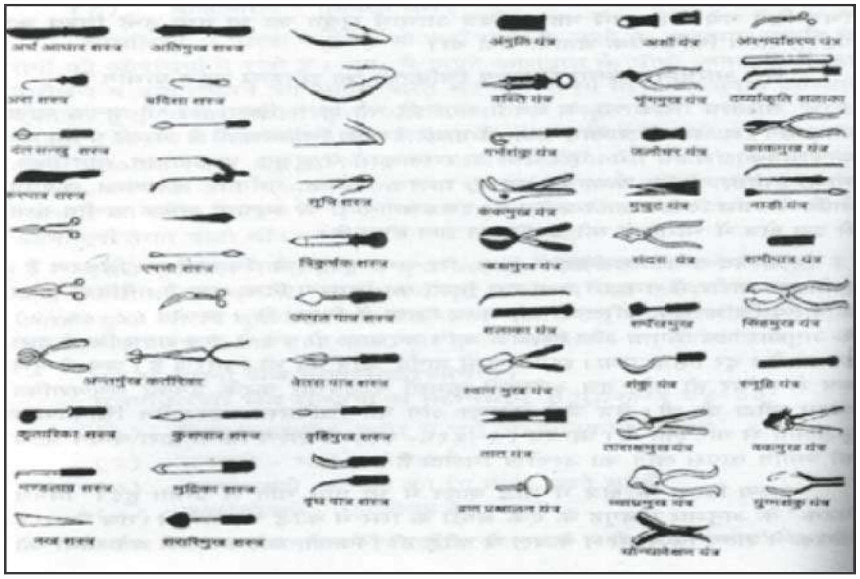

सुश्रुत द्वारा वर्णित शल्य चिकित्सा के कुछ उपकरण तथा यंत्र

अपने इस ग्रन्थ में प्लास्टिक सर्जरी का उल्लेख सैकड़ों साल पहले ही कर दिया था। सुश्रुत की इस पद्धति का अनुसरण यूरोप ने किया। आज यह विश्वभर में प्रचलित हो गई है। यह भारत की विश्व को बड़ी देन है।

शल्य चिकित्सा के लिए सुश्रुत ने सौ से अधिक औजारों तथा यन्त्रों का आविष्कार किया। इनमें से अधिकांश यन्त्रों का प्रयोग आज भी किया जाता है।

गतिविधि–

आओ उत्तर खोजें–

1. शल्य क्रिया के क्षेत्र में सबसे प्रमुख नाम किसका है?
2. शल्य क्रिया के क्षेत्र में प्राचीन भारतीय ग्रन्थ का नाम बताइये?
3. सुश्रुत संहिता ग्रन्थ किसके द्वारा लिखा गया है?
4. सुश्रुत ने ऐसी कौनसी वस्तुओं का आविष्कार किया जिनका प्रयोग आज भी हो रहा है?

महान् गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन्

महान् गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन् का जन्म 22 दिसम्बर सन् 1887 को तमिलनाडू के इरोड नगर में हुआ। इनका पैतृक स्थान तंजोर जिले में कुम्बकोणम् हैं। इनके पिता का नाम श्रीनिवास आयंगर था। इनकी माता का नाम कोमलताम्मल था। रामानुजन की माँ धार्मिक प्रवृत्ति की थी। प्रारम्भ से ही रामानुजन् जिज्ञासुवृत्ति एवं कुशाग्र बुद्धि के थे। इनकी गणित में विशेष रूचि थी। हाई स्कूल तक वे अपनी कक्षा में सदैव प्रथम आते थे। हाई स्कूल की परीक्षा सन् 1904 ई. में उत्तीर्ण की और अच्छा स्थान प्राप्त करने पर उन्हे छात्रवृति मिली।16 जनवरी 1913 ई. को रामानुजन् ने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध गणितज्ञ प्रोफेसर जी.एच. हार्डी को एक पत्र लिखा जिसमें उन्होने लगभग 120 प्रमेय भी भेजे। रामानुजन् की प्रतिभा को देखकर प्रो. हार्डी ने उन्हे इंगलैंड बुला लिया। उनके बुलावे पर 14 अप्रेल 1914 ई. को रामानुजन् लन्दन पहुंचे। इंगलैंड में उन्होने प्रो. हार्डी के साथ अनुसंधान कार्य किया। केवल एक वर्ष में (1915 ई. में) रामानुजन् और प्रो. हार्डी ने सम्मिलित रूप से 9 शोध प्रकाशित किए । रामानुजन् को उनके शोध–पत्र के आधार पर बिना परीक्षा दिए मार्च 1916 ई. में स्नातक उपाधि प्रदान कर दी। 27 मार्च 1919 ई. को वे इंगलैंड से भारत पहुँचे तथा 26 अप्रेल 1920 ई. को 33 वर्ष की आयु में उनका देहांत हो गया। वे इतने मितव्ययी थे कि गणितीय समस्याओं का हल करने के लिए स्लेट का प्रयोग करते थे और अंतिम परिणाम अपनी नोट बुक में लिखते थे। श्री रामानुजन् भारतीय सभ्यता व संस्कृति के सच्चे पुजारी थे। इंगलैंड जाते समय उन्होने अपने पिताजी को वचन दिया था कि मै इंगलैंड में भी हिन्दुस्तानी रहूँगा और ऐसा कोई कार्य नहीं करूँगा, जिससे भारतीयता को चोट पहुँचे। विदेश में शोध कार्य करते हुए भी अपना निजी कार्य यथा भोजन बनाना आदि स्वयं अपने हाथ से करते थे। इतना होते हुए भी वे अभावों में ही

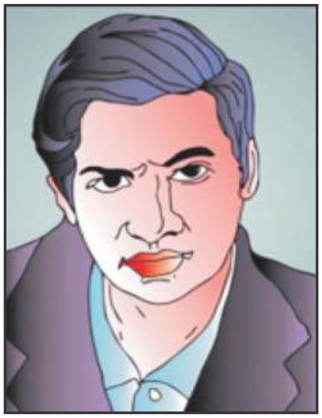

श्रीनिवास रामानुजन्

बताइए कब–क्या हुआ ?

22 दिसम्बर 1887 ई.
16 जनवरी 1913 ई.
14 अप्रेल 1914. ई.
27 मार्च 1919 ई.
20 अप्रेल 1920 ई.

रहे किन्तु अभावों की परवाह न करते हुए भी अध्ययन, अनुसंधान व लेखन का कार्य जीवन के अंतिम क्षण तक करते रहे।

गतिविधि–

भारत के अन्य वैज्ञानिक कौन–कौन रहे है? अपने गुरूजी से जानकारी प्राप्त करें और सूची बनाएँ।

महाकवि माघ

महाकवि माघ

संस्कृत के महाकवि माघ का जन्म श्रीमालनगर (भीनमाल, राजस्थान) में हुआ था। माघ का समय सातवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध एवं आठवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में माना जाता है। महाकवि माघ बड़े उदार, सहृदय एवं दानी व्यक्ति थे। उनका विवाह एक कुलीन घर की कन्या माल्हण देवी के साथ हुआ था। माघ ने 'शिशुपालवधम्' नामक काव्य की रचना की। माघ के कुछ समालोचक मानते है कि यदि भगवान् कृष्ण की आराधना करनी हो तो माघ–काव्य का अध्ययन करें। संभवतः श्री कृष्ण की आराधना करने के लिये ही माघ ने 'शिशुपालवधम्' की रचना की थी। इनके पिता का नाम दत्तक था। माघ दानवीर थे। अत्यन्त दानशीलता के कारण जीवन के अंतिम दिनों में वे दरिद्र भी हो गए थे। उनकी पत्नी भी उनके समान दानशील थी। कहते हैं, विपिन्न अवस्था में एक ब्राह्मण अपनी पुत्री के विवाह के लिए याचक बनकर आया। रात्रि का प्रथम प्रहर बीत रहा था माघ अपनी सोई पत्नी के कक्ष में गए, उनके हाथ का एक कंगन उतार कर लाए और ब्राह्मण को दे दिया। इतने में उनकी पत्नी जग गई और दूसरे हाथ का भी कंगन लाकर याचक को दे दिया और कहा कि तुम्हारी पुत्री को दोनों हाथों में कंगन पहनने चाहिए। यह दृश्य देखकर – महाकवि माघ की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी।

एक दन्त कथा

माघ जब रचना करते थे तब अपना ही रचित श्लोक अथवा पद उन्हें दूसरे दिन उपयुक्त नहीं लगता था, तो वे उसे काट देते थे। जिससे कोई भी रचना पूर्ण नहीं होती थी। एक रात उनकी पत्नी के स्वप्न में विद्या की देवी सरस्वती प्रकट हुई। माघ की पत्नी ने देखा कि विद्या की देवी के शरीर पर घाव लगे हैं और उससे रक्त बह रहा है। माघ–पत्नी माल्हण ने जब पूछा कि माँ ! आपकी यह दशा किसने की ? तो माँ ने कहा – 'माघ प्रतिदिन पूर्व रचित पद्यों को दूसरे दिन काटता जायेगा तो ये घाव सदा रिसते ही रहेंगे।' माघ की पत्नी ने उपाय पूछा तो माँ ने कहा कि इसे जमीकन्द की सब्जियाँ खिलाओ। माघ पत्नी ने एक दिन माघ को जमीकन्द की सब्जी परोस दी। माघ ने उसे खा लिया। बाद में वे अपनी एक मात्र कृति 'शिशुपालवधम्' को पूर्ण कर सके।

यद्यपि इस दन्त कथा का कोई प्रामाणिक आधार तो नहीं है, किन्तु यह अनुमान लगाया जा सकता है कि काव्य–लेखन में उनकी पत्नी का भी अप्रत्यक्ष रूप से योगदान रहा है।

माध ने साहित्य, व्याकरण शास्त्र, नीतिशास्त्र, पुराण, आर्युवेद, न्याय, ज्योतिष, प्राकृतिक–सौन्दर्य, ग्राम्य–जीवन, पशु–पक्षी जीवन, सौन्दर्य, काव्य, पदलालित्य एवं राजनीति शास्त्र के सिद्धान्तों का समावेश एक ही ग्रन्थ 'शिशुपालवध' में कर दिया, जिससे अन्य ग्रन्थ रचने की आवश्यकता ही नहीं रही।

गतिविधि–

पढें, जानें एवं बताएँ–

1. माघ के माता–पिता का नाम क्या था?
2. माघ द्वारा लिखी गई काव्य रचना कौन सी है ?

सूत्रधार मण्डन

सूत्रधार मण्डन ने अपने ग्रन्थों से भारतीय स्थापत्य शास्त्र परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने में बड़ा योगदान दिया है। मण्डन उस काल में हुए जबकि मन्दिर, मूर्ति और चित्रकला आदि संकट में थे। ऐसे में मण्डन ने अपने ग्रन्थों से स्थापत्य शास्त्रियों के लिए नियम देकर महल, घर, निवास, जलाशय, मन्दिर, प्रतिमा आदि के निर्माण में सहयोग किया। भारतीय वास्तुशास्त्र में मण्डन का योगदान सर्वाधिक माना जाता है। कुम्भलगढ जैसा अभेद्य दुर्ग मण्डन के मार्गदर्शन और योजना के अनुसार ही बना है। उसकी कुम्भलगढ में वट वृक्ष के नीचे प्रतिमा–गृह बनाने की योजना थी, जो पूरी नहीं हुई। किन्तु वे प्रतिमाएँ अभी उदयपुर के राजकीय संग्रहालय में सुरक्षित है।

सूत्रधार मण्डन

भारतीय वास्तुशास्त्र के सैद्धान्तिक और व्याहारिक पक्षों के ख्यातनाम् जानकारों में सूत्रधार मण्डन का नाम महत्त्वपूर्ण है। वास्तुशास्त्र में कला पक्ष, गणित व ज्योतिष के क्षेत्र में उसके मत विगत साढे पाँच सौ सालों से हमारे यहाँ माने जाते रहे हैं।

देवप्रासाद, वापी, जलाशय, प्रतिमा सम्बन्धी स्थापत्य कार्य का उसे काफी अनुभव था। मण्डन मेवाड़ के महाराणा कुम्भा का प्रिय वास्तुशिल्पी रहा है।

मण्डन गुजरात के सोमपुरा शिल्पज्ञ कुल से सम्बन्धित था। उसके परिजन सम्भवतः सोमनाथ, जिसे पुराणों में सोमपुर कहा गया है, से सम्बन्धित थे। मण्डन के पिता का नाम क्षेत्रार्क (खेता) था। मण्डन के लिखे गए ग्रन्थों में देवतामूर्ति प्रकरण, प्रासादमण्डनम्, वास्तुराजवल्लभं वास्तुशास्त्रम्ं, वास्तुमण्डनम्, वास्तुसार, वास्तुमंजरी प्रमुख है।

महर्षि पाराशर

अन्नं हि धान्यासंजातं धान्यं कृष्या बिना न च।
तस्मात सर्व परित्यज्य कृषि यत्नेन कारयेत।।

अर्थात् अन्न धान्य (फसल) से उत्पन्न होता है और धान्य बिना कृषि के नहीं होता। इस कारण सब कुछ छोड़कर प्रयत्नपूर्वक कृषि कार्य करना चाहिए।

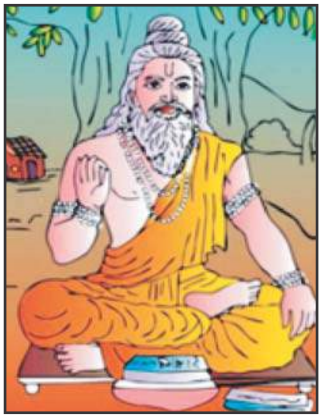
महर्षि पाराशर

प्रमुख रचनाकार महर्षि पाराशर का जन्म स्थल वर्तमान पुष्कर (अजमेर) था। इन्होंने 'कृषि पाराशर' नामक ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ में गौ–धन पूजा का प्राचीन सन्दर्भ, दीपावली के बाद पड़वा को करने का वर्णन है।

महर्षि पाराशर ने कृषि को कितना ऊँचा स्थान दिया है, उक्त श्लोक से ही स्पष्ट हो रहा है। वस्तुतः मनुष्य का जीवन अन्न में ही है और उसका उत्पादन कृषि के अतिरिक्त किसी अन्य साधन द्वारा सम्भव नहीं है। भारत चिरकाल से कृषि प्रधान देश रहा है। इस कारण भारतीय ऋषियों ने कृषि विषयक कई बातें कही और लिखी है। विभिन्न शास्त्रों में पाराशर ऋषि को 'कृषिशास्त्र' के प्रवर्तक के रुप में स्मरण किया गया है।

'कृषि पाराशर' ग्रन्थ में पाराशर ऋषि ने वर्षा सम्बन्धी भविष्यवाणी की है, जिनका आज भी कृषक प्रयोग करते हैं। इस ग्रन्थ का दसवीं सदी में पुनर्लेखन किया गया। यह ग्रन्थ कृषि पचांग का कार्य करता है। कृषि कार्य कब शुरु करना चाहिए ? कौनसी फसल कब खेत में उगाई जाए ? खेती के काम में आने वाले पशुओं के साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए ?अतिवृष्टि–अनावृष्टि की जानकारी, गौशाला तथा उसके रख–रखाव की जानकारी के साथ ही पशु–पक्षियों के व्यवहार, हवा की दिशा आदि से मौसम के पूर्वानुमान के बारे में इस ग्रन्थ में बताया गया है।

कृषि पाराशर के विषय

यह भी जानें

1. कौनसी फसल कब उगाई जाए ?
2. खेती के काम आने वाले पशुओं के साथ कैसा व्यवहार किया जाए ?
3. गौशाला व उसके रख–रखाव कैसे किया जाय ?
4. मौसम का पूर्वानुमान कैसे लगाया जाए ?
5. कृषि कार्य कब प्रारम्भ करना चाहिए ?

चक्रपाणि मिश्र

चक्रपाणि मिश्र

महाराणा प्रताप के दरबारी पण्डित चक्रपाणि मिश्र ने चार ग्रन्थों की रचना की। यह थे– विश्ववल्लभ, मूहूर्तमाला, व्यवहारादर्श और राज्याभिषेक पद्धति। 'विश्ववल्लभ' की रचना में पण्डित चक्रपाणि मिश्र ने जिस स्रोत–सामग्री का सहारा लिया है, उसमें वराहमिहिर कृत 'वृहत्संहिता' मुख्य है। चक्रपाणि मिश्र वराहमिहिर से बड़ा प्रभावित था।

अपनी द्वितीय रचना 'राज्याभिषेक पद्धति' में उसने वराहमिहिर की सामग्री का उपयोग किया है। चक्रपाणि मिश्र ने

भूमिगत जलज्ञान बताने वाले 'हरवा' का उल्लेख किया है। गाँवों में आज भी 'हरवों' की बड़ी पूछ है। 'हरवा' विभिन्न संकेतों के आधार पर पानी की उपलब्धता की दिशा और गहराई बताता है।

चक्रपाणि, उग्र मिश्र का पुत्र था। चित्तौड़ की तलहटी में बसा गाँव पीपली इस परिवार को मिला हुआ था। चक्रपाणि ने विष्णु धर्मोत्तर पुराण से लेकर वराहमिहिर की वृहत्संहिता में एकत्रित सामग्री का उपयोग करते हुए 'विश्ववल्लभ' की रचना की। इस कृति में रोगोपचार विधियों में पेड़ की सिंचाई, पौध स्नान (फव्वारा), धूपन, छिड़काव–बुरकाव और मंत्र–पाठ मुख्य है। इनका उपयोग आज भीकिया जा रहा है। चक्रपाणि ने जल संसाधनों के विकास पर पर्याप्त बल देने को कहा है। चक्रपाणि को विभिन्न पेड़ों की प्रकृति, उनके औषधिय गुण–धर्मों की जानकारी थी। वह अच्छा वनस्पतिशास्त्री तो था ही, वास्तुविज्ञान के अन्तर्गत उसे जलाशय तथा जलस्रोतों के निर्माण का विशद् ज्ञान भी था।

महाराणा प्रताप के दरबारी पण्डित चक्रपाणि मिश्र ने 'राज्याभिषेक पद्धति' में राजवल्लभ के श्लोकों को उद्धत किया और 'विश्ववल्लभ–वृक्षायुर्वेद' में जलाशय वर्णन के सन्दर्भ में राजवल्लभ के श्लोकों को विस्तार दिया। शिल्पशास्त्रीय ग्रन्थों के सृजनकर्ताओं में चक्रपाणि मिश्र का स्थान ऋषि तुल्य है।

शारंगधर

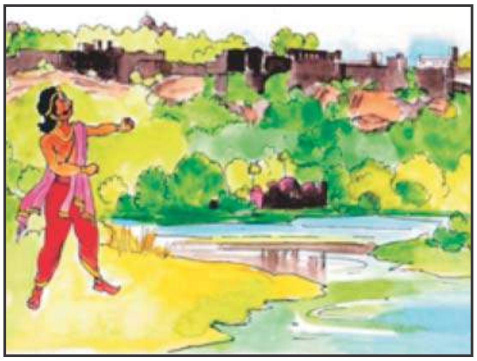
शारंगधर

शारंगधर हम्मीर (रणथम्भौर का शासक) के गुरू राघव देव का पौत्र व दामोदर का पुत्र था इसने हम्मीर रासो तथा शारंगधर संहिता ग्रन्थों की रचना की थी। शारंगधर का योगदान उसके द्वारा तैयार संगीत पद्धति से है। इसको उसके नाम पर ही सारंगधर पद्धति कहा जाता है। इसमें संगीत के लुप्त ग्रन्थ 'गान्धर्वशास्त्र' का संक्षिप्त पाठ सुरक्षित है, जो मध्यकालीन भारतीय संगीत कला को जानने के लिए मुख्य आधार है। इसी पद्धति में 'वृक्षायुर्वेद ग्रन्थ' का संक्षिप्त रुप है। जिनके आधार पर अनेक राजाओं और प्रजाजनों ने वाटिकाओं का विकास कर पर्यावरण की सुरक्षा में अपना योगदान किया।

शारंगधर की पद्धति योग जैसे विषय को भी समाहित किए है। अष्टांग योग का वैज्ञानिक स्वरुप इस ग्रन्थ में स्वास्थ्य और निरापद जीवन के साथ जोड़ा गया है। वैज्ञानिक तरीके से ज्ञान के उपयोग को प्रस्तुत करने के दृष्टिकोण शारंगधर का योगदान उसकी अनेक सूक्तियों के लिए है। इसीलिए अनेक विदेशी विद्वानों ने शारंगधर के योगदान की प्रशंसा की है।

गतिविधि–पढें व बताएँ:

1. सूत्रधार मण्डन का योगदान सबसे अधिक किस क्षेत्र में माना जाता है ?
2. वास्तुशास्त्र का मुख्य विषय क्या होता है ?
3. महर्षि पराशर ने किस ग्रन्थ की रचना की ?
4. चक्रपाणि मिश्र ने कौन–कौन से ग्रन्थों की रचना की ?
5. 'वृक्षायुर्वेद' ग्रन्थ की रचना किसने की ?

शब्दावली

परिष्कृत	–	उन्नत
वापी	–	बावड़ी
शिल्पज्ञ	–	शिल्प कला का ज्ञाता

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न एक का सही उत्तर कोष्ठक में लिखें–

1. 'वृक्षायुर्वेद' ग्रन्थ की रचना की थी –
   (अ) सूत्रधार मण्डन ने (ब) चक्रपाणि मिश्र ने
   (स) महर्षि सुश्रुत ने (द) शारंगधर ने ( )

2. निम्नलिखित को सुम्मेलित किजिएः–

	लेखक	**नाम पुस्तक**
(1)	चन्दबरदाई	शिशुपालवधम्
(2)	ब्रहमगुप्त	वास्तुमंजरी
(3)	महर्षि सुश्रुत	कृषि पराशर
(4)	महाकवि माघ	विश्ववल्लभ
(5)	सूत्रधार मण्डन	ब्रहमस्फुट सिद्धान्त
(6)	महर्षि पराशर	सुश्रुत संहिता
(7)	चक्रपाणि मिश्र	पृथ्वीराज रासो

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति करेंः–
   (1) .... का जन्म भीनमाल में माना जाता है।
   (2) भारत का यह गणित तथा खगोल विज्ञान का ज्ञान अरब तथा बाद में .... को प्राप्त हुआ।
   (3) .... ही वे प्रथम चिकित्सक माने जाते हैं, जिन्होंने शल्य चिकित्सा को एक व्यवस्थित स्वरुप प्रदान किया।
   (4) .... को उनके शोधपत्रों के आधार पर बिना परीक्षा दिये स्नातक की उपाधि प्रदान की गई।
   (5) .... अत्यन्त दानशीलता के कारण दरिद्र हो गए।
   (6) महाराणा प्रताप के दरबारी पण्डित श्री .... थे।
   (7) महर्षि .... का जन्म स्थल पुष्कर था।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :–

1. पृथ्वीराज चौहान के राज कवि का नाम बताइये ?
2. चिकित्सा के क्षेत्र में प्लास्टिक सर्जरी का प्रयोग सबसे पहले किसने किया ?
3. ब्रह्मगुप्त का गणित व खगोल के क्षेत्र में क्या योगदान रहा ?
4. प्रसिद्ध गणितज्ञ रामानुजन के बारे में आप क्या जानते हैं ?
5. सूत्रधार मण्डन ने कौन–कौन से शास्त्रों की रचना की ?
6. कृषि के क्षेत्र में महर्षि पराशर का क्या योगदान रहा है ?

आओ करके देखें :–

1. एक पन्ने पर महापुरुषों के चित्र बनायें अथवा चित्रों की कटिंग चिपकायें एवं चित्र के सामने उनके योगदान का वर्णन करें।
2. महर्षि सुश्रुत द्वारा वर्णित उपकरण के चित्र यहाँ दिये गये हैं। अन्य उपकरणों के चित्र खोजकर उनके चित्र अपनी नोट बुक में बनायें।
3. कला, साहित्य, संगीत, विज्ञान, ज्योतिष आदि के क्षेत्र में योगदान देने वाले अन्य महापुरूषों की जानकारी अपने शिक्षकों से प्राप्त करें। इसमें पुस्तकालय का भी उपयोग किया जाना चाहिए।